

## पाठ-2

### दोपहर का भोजन

**विधा – कहानी**

**कहानीकारी –अमरकांत**

**जीवन-परिचय-** जन्म जुलाई सन् 1925 को उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के भागलपुर (नगरा) नामक गाँव में। वास्तविक नाम-श्रीराम वर्मा।

**रचनाएँ –** कहानी संग्रह- जिन्दगी और जौक, देश के लोग, मौत का नगर, मित्र-मिलन, कुहासा आदि।

**उपन्यास –** सूखा पत्ता, पराई डाल का पंछी, सुख-जीवी, बीच की दीवार, काले उजले दिन, ग्राम सेविका, इन्हीं हथियारों से आदि।

**साहित्यिक विशेषताएँ –** 1. अमरकांत नई कहानी आंदोलन के एक प्रमुख कहानीकार हैं। 2. चित्रात्मकता

**भाषा-शैली –** इन्होंने अपनी अधिकांश कहानियों में बोल-चाल की सहज, सरल भाषा का प्रयोग किया है। प्रसंग व पात्रानुसार आंचलिक मुहावरों व शब्दों के प्रयोग से भाषा रोचक व जीवंत बन गई है। कहीं-कहीं तत्सम् शब्दों के अतिरिक्त अरबी, फारसी, अंग्रेजी व देशज शब्दों का प्रयोग भी मिलता है। वर्णनात्मक शैली को प्रभावी बनाने के लिए संवादों का यदा-कदा प्रयोग।

**पाठ-परिचय –** 'दोपहर का भोजन' गरीबी से जूझते एक निम्न मध्यवर्गीय शहरी परिवार की कहानी है। जिसके मुखिया की अचानक नौकरी छूट जाने के कारण परिवार के सामने आर्थिक संकट खड़ा हो जाता है। परिवार के सदस्यों को भरपेट भोजन तक नसीब नहीं हो रहा है। पूरे परिवार का संघर्ष भावी उम्मीदों पर टिका है। सिद्धेश्वरी संकट की इस घड़ी में परिवार के सभी सदस्यों को एकजुट एवं चिंतामुक्त रखने का अथक प्रयास करती है। वह अपने परिवार को टूटने से बचाने का हर संभव प्रयत्न करती है।

**स्मरणीय बिन्दु –** सिद्धेश्वरी तथा मुंशीजी के परिवार में उनके अतिरिक्त उनके तीन पुत्र हैं – 21 वर्षीय बड़ा बेटा रामचंद्र, 18 वर्षीय मँझला बेटा मोहन तथा छः वर्षीय छोटा बेटा प्रमोद।

रामचंद्र एक स्थानीय दैनिक समाचार-पत्र के दफ्तर में प्रूफ रीडिंग का काम सीखता है तथा नौकरी की तलाश में हैं। मोहन हाईस्कूल के इम्तिहान की तैयारी कर रहा है।

**दोपहर का भोजन**—सिद्धेश्वरी पाठ की जीवन्त पात्र, वह अत्यन्त अभाव में अपने परिवार की गाड़ी को खींच रही है। परिवार की स्थिति अत्यन्त दयनीय होने पर भी वह परिवार को जोड़ने का पूरा प्रयास करती है। परिवार को जोड़े रखने के लिए वह झूठ का सहारा भी लेती है। उसका अथक प्रयास रहा है कि घर के सभी सदस्यों को सुख पहुँचाए, भले ही स्वयं कष्टों में जीती रहे। वह परिवार के सदस्यों के सामने एक दूसरे की कमी न बताकर उनकी बातों को छिपाती है ताकि किसी भी सदस्य को मानसिक कष्ट न हो। ये सभी बातें उसके अपार धैर्य को दर्शाती हैं। सिद्धेश्वरी ने झूठ बोलकर कोई पाप नहीं किया बल्कि परिवार के सभी सदस्यों को एक-दूसरे से जोड़े रखा है। ऐसा झूठ जो किसी भलाई के लिए बोला जाए उसे बोलने में कोई बुराई नहीं है।

घर के सभी सदस्य रामचंद्र, मोहन तथा मुंशीजी बारी-बारी भोजन के लिए आते हैं। सभी मन ही मन इस वास्तविकता से परिचित हैं कि घर में पर्याप्त भोजन नहीं है। वे सभी कुछ न कुछ बहाना बनाकर आधे पेट ही भोजन करके उठ जाते हैं।

रामचंद्र के भोजन के दौरान सिद्धेश्वरी मंझले बेटे मोहन की पढ़ाई की झूठी तारीफ करती है। वह मोहन से झूठमूठ कहती है कि रामचंद्र उसकी प्रशंसा करता है। मुंशी जी से भी वह झूठ बोलती है कि रामचंद्र उन्हें देवता के समान कहता है। 'मकान किराया नियंत्रण विभाग' के क्लर्क के पद से उनकी छँटनी हो चुकी थी और आजकल मुंशीजी काम की तलाश में हैं। मुंशी जी भोजन करते समय सिद्धेश्वरी से नजरें चुराते हैं। उन्हें मालूम है कि घर में भोजन बहुत कम है और वह स्वयं को इस स्थिति का जिम्मेदार मानते हैं।

भोजन के दौरान सिद्धेश्वरी एवम् मुंशी जी असंबद्ध बातें करते हैं जैसे बारिश का न होना, मक्खियों का होना, फूफा की बीमारी तथा गंगाशरण बाबू की लड़की की शादी—हालांकि इन बातों का कोई महत्व नहीं है फिर भी ये सभी बातें पाठ से जुड़ी हुई हैं। ये सभी बातें उनके मन की व्यथा, जीवन के अभाव आदि को दर्शाती हैं। इन बातों को करके शायद वे मूल विषय (गरीबी एवं अभाव) से बचना चाहते थे तथा अपने दुखों को कम करना चाहते थे।

सिद्धेश्वरी पर्याप्त भोजन न होते हुए भी सदस्यों से और भोजन लेने का आग्रह करती है। ऐसा करके वह घर के सदस्यों को गरीबी एवं अभाव का एहसास नहीं होने देना चाहती। वह सदस्यों की एक-दूसरे के विषय में झूठी तारीफ करके गरीबी, अभावग्रस्त एवं संघर्षपूर्ण वातावरण में भी उन्हें एकजुट तथा खुशहाल रखने की कोशिश करती है।

सबको भोजन करवाने के पश्चात् सिद्धेश्वरी जब स्वयं भोजन करने बैठती है। तो उसके हिस्से थोड़ी-सी दाल, जरा-सी चने की तरकारी तथा मात्र एक रोटी आती है। तब उसे अचानक अपने सबसे छोटे पुत्र प्रमोद का ध्यान आता है, जिसने अभी तक भोजन नहीं किया था। वह आधी रोटी तोड़कर प्रमोद के लिए रख देती है। तथा शेष आधी लेकर भोजन करने बैठ जाती है। पहला ग्रास मुँह में रखते ही उसकी आँखों से टपटप आँसू गिरने लगे जो उसकी विवशता को बयान करते हैं।

सप्रसंग व्याख्या – व्याख्या हेतु अनुच्छेद “मुंशी जी ने पत्नी.....गुड़ होगा क्या?”

पाठ का नाम – दोपहर का भोजन

प्रसंग–

लेखक का नाम – अमरकांत

**संदर्भ** – प्रस्तुत कहानी गरीबी से जूझ रहे एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार की कहानी है। इस अंश में लेखक ने परिवार के मुखिया की मनोदशा का चित्रण किया है। पत्नी सिद्धेश्वरी जब मुंशी जी से बड़े लड़के की कसम दिलाकर एक चपाती और खाने का आग्रह करती है तब.....

**व्याख्या** – मुंशी जी ने पत्नी की ओर अपराधी-भाव से देखा क्योंकि वे बेरोजगार थे और घर की स्थिति से भली-भाँति परिचित थे। उन्होंने दबी आँख से रसोई की ओर देखा जैसे सिद्धेश्वरी को बता रहे हो कि उन्हें घर की हालत पता है। तब अपना और सिद्धेश्वरी का मान बचाते हुए एक अनुभवी गृहस्थ की भाँति पत्नी से कहा कि अन्न और नमकीन से उनका दिल भर गया है जबकि वास्तव में उनकी भूख अभी शांत नहीं हुई थी। इसीलिए वे शपथ के बहाने पत्नी से गुड़ के बारे में पूछकर शर्बत पीने की अपनी इच्छा को भी व्यक्त कर देते हैं।

**विशेष –**

1. अभावग्रस्त निम्न मध्यवर्गीय गृहस्थ की मनोदशा का सजीव चित्रण।
2. शैली संवादात्मक है तथा प्रवाहपूर्ण हैं।
3. भाषा, सरल, सहज व पात्रानुकूल हैं तथा पाठक को अंत तक बाँधे रखने में पूर्ण सक्षम हैं।
4. चित्रात्मक भाषा है। दृश्य जैसे पाठक के समक्ष प्रस्तुत हो जाते हैं।
5. लेखक ने सामाजिक जीवन और उसके अनुभवों की यथार्थवादी ढंग से अभिव्यक्ति की है।

**व्याख्या अभ्यास-कार्य हेतु अनुच्छेद-**

क) उन्माद की रोगिणी.....प्रमोद को कुछ हो जाए।

ख) सारा घर.....कहीं जाना न हो।

**विचारणीय प्रश्न :-**

1. सिद्धेश्वरी घर के सदस्यों से एक-दूसरे के विषय में झूठ क्यों बोलती हैं?
2. मुंशी जी तथा सिद्धेश्वरी की असंबद्ध बातें कहानी से कैसे संबद्ध हैं?
3. ‘उसने पहला ग्रास मुँह में रखा और तब न मालूम कहाँ से उसकी आँखों से टपटप आँसू चूने लगे।’ – इस कथन के आधार पर सिद्धेश्वरी की मनःस्थिति का वर्णन कीजिए।

4. 'दोपहर का भोजन' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।
5. सिद्धेश्वरी का चरित्र चित्रण कीजिए।
6. आशय स्पष्ट कीजिए—
  - क) वह मतलवाले की तरह उठी और गगरे से लोटा भर पानी लेकर गट—गट चढ़ा गई।
  - ख) यह कहकर उसने अपने मंझले लड़के की ओर देखा, जैसे उसने कोई चोरी की हो।
  - ग) मुंशी जी ने चने के दानों की ओर इस दिलचस्पी से दृष्टिपात किया, जैसे उनसे बातचीत करने वाले हो।
7. घोर गरीबी और अभाव से जूझते परिवार के सदस्यों के बीच एक—दूसरे के प्रति संवेदना और संवाद बनाए रखने के लिए सिद्धेश्वरी क्या प्रयास करती है? स्पष्ट करें।
8. मुंशी जी द्वारा पैर पसार के सोने में कौन—सा भाव व्यक्त होता है?
9. रामचन्द्र, मोहन और मुंशी जी खाते समय रोटी न लेने के लिए बहाने करते हैं उसमें कैसी विवशता है, स्पष्ट कीजिए।
10. सिद्धेश्वरी के झूठ सौ सत्यों से भारी हैं विवेचना कीजिए।
11. 'दोपहर का भोजन'—कहानी की मूल संवेदना को स्पष्ट कीजिए।

#### प्रश्न—अभ्यास (उत्तर सहित)

1. 'सिद्धेश्वरी के झूठ सौ सत्यों पर भारी हैं — विवेचना कीजिए।  
 उत्तर— सिद्धेश्वरी का परिवार भयंकर गरीबी से ग्रस्त था। अर्थाभाव (गरीबी) के कारण परिवार के सदस्यों में स्नेह का बंधन कमजोर होता जा रहा था। परिवार को बचाए रखने के लिए वह एक सदस्य के सामने दूसरे के विषय में झूठ बोलती थी ताकि परिवार में बिखराव न हो, परिवार के सदस्यों में एक—दूसरे के प्रति सम्मान, स्नेह एवं निकटता बनी रहे। उसके झूठ परिवार को टूटने से बचाते हैं। वह झूठ जो कल्याण के काम आए, सौ सत्यों से भी भारी होता है।
2. 'दोपहर का भोजन' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।  
 उत्तर— 'दोपहर का भोजन' कहानी में निम्न—मध्यवर्गीय परिवार की गरीबी का मार्मिक चित्रण है। इस परिवार की स्थिति इतनी दयनीय है कि घर में खाने के लिए भी पूरा भोजन नहीं है। इस कहानी का पूरा घटनाक्रम दोपहर के

भोजन के समय ही घटित होता है, जो कहानी की मूल संवेदना को प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त करने में पूर्ण सक्षम है। घर के मुखिया के बेरोजगार हो जाने पर परिवार को किस प्रकार एक के बाद एक समस्याओं से जूझना पड़ता है। दोपहर के समय घर के सभी सदस्य एक के बाद एक घर आते हैं और परिवार की स्थिति और अपने संघर्ष को प्रकारान्तर से व्यक्त कर कहानी को आगे बढ़ाते हैं। अतः यह शीर्षक सर्वथा उचित है।

3. 'उसने पहला ग्रास मुँह में रखा और तब न मालूम कहाँ से उसकी आँखों से टप-टप आँसू चूने लगे।

उत्तर— सिद्धेश्वरी एक भारतीय गृहिणी है। वह घर की सभी समस्याओं को अपने ऊपर लेती हैं तथा परिवार के अन्य सदस्यों के बीच कटुता नहीं आने देती। घर की आर्थिक दशा खराब है। वह कम साधनों में भी परिवार का पेट भरने की कोशिश करती है। इस काम में उसे बहुत झूठ बोलना पड़ता है। उसे इस बात की पीड़ा है कि घर का हर सदस्य आधे पेट भोजन करके पेट भरा होने का नाटक करता है। वह स्वयं भी भूखी ही रहती है। इस दर्द को वह किसी दूसरे के समक्ष व्यक्त नहीं कर पाती और वह पीड़ा आँखों से आँसुओं के माध्यम से निकलती है।